स्कूल, अभिभावकों और समुदाय के बीच मज़बूत सम्बन्धों की संस्कृति निर्मित करना

अर्धेन्दु शेखर दाश

विद्यार्थियों का समग्र विकास तभी सबसे बेहतर ढंग से होता है जब स्कूल, अभिभावक और समुदाय साथ मिलकर काम करते हैं। स्कूल, समुदाय और अभिभावक, दोनों के साथ सम्बन्धों को मज़बूत करके सीखने के ज़्यादा अवसर प्रदान कर सकते हैं और मूल्यवान संसाधनों के साथ स्थानीय ज्ञान भी हासिल कर सकते हैं। यह देखते हुए कि बच्चे अपने परिवार और समुदाय के साथ महत्त्वपूर्ण समय बिताते हैं, स्कूलों को स्कूली संस्कृति के एक हिस्से के रूप में विद्यार्थियों के विकास के लिए उनके अभिभावकों और समुदाय के साथ नियमित और संरचनागत जुड़ाव की योजना बनाने की ज़रूरत है।

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़ में हम समुदाय को समझने, मज़बूत सम्बन्ध बनाने और अपने विद्यार्थियों के लिए सीखने का एक सहायक माहौल बनाने हेतु अभिभावकों और समुदाय के साथ जुड़ने के लिए आयोजन करते रहते हैं। इन जुड़ावों की योजना बनाते समय, हमने उस मौक़े को लेकर भी सावधानीपूर्वक विचार किया है जब समुदाय के लोग मौजूद हों ताकि उनके साथ होने वाले ये जुड़ाव प्रभावी हो सकें। यहाँ कुछ ऐसी प्रक्रियाओं के बारे में बताया गया है जिन्हें हमारे स्कूल ने सीखने का एक सकारात्मक माहौल बनाने के लिए पिछले कुछ सालों में अपनाया है। मुझे उम्मीद है, इससे दूसरे स्कूलों को भी समुदाय के लोगों के साथ जुड़ने में मदद मिलेगी।

अभिभावकों का उन्मुखीकरण

हर अभिभावक की यह ख़्वाहिश होती है कि उनका बच्चा जिस स्कूल में जाता है वहाँ उसे अच्छी-से-अच्छी शिक्षा मिले। लेकिन ज़्यादातर मामलों में, अभिभावकों को बच्चे की शिक्षा और विकास में अपनी भूमिका के बारे में पता ही नहीं होता। अधिकांश परिवारों में, अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा और प्रगति पर उनके साथ चर्चा ही नहीं करते हैं, इसलिए उनकी पाठ्यचर्या सम्बन्धी अपेक्षाएँ भी स्पष्ट नहीं होतीं। इस चुनौती से निपटने के लिए, हम अभिभावकों के लिए कई आवश्यकता-आधारित उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

- **पाठ्यचर्या सम्बन्धी मदद :** बुनियादी चरण में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों के साथ हम विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यचर्या सम्बन्धी अपेक्षाओं और शिक्षण के तरीक़े के अलावा इस बात पर भी चर्चा करते हैं कि वे घर पर अपने बच्चे की मदद किस तरह कर सकते हैं। हमने

चित्र-1 : *अभिभावकों के लिए एक कार्यशाला।*

देखा है कि कार्यशाला के बाद अपने बच्चों को शैक्षिक सहायता प्रदान करने वाले अभिभावकों की संख्या में इज़ाफ़ा हुआ है। इसके साथ ही उन्होंने होमवर्क आदि से जुड़े सवालों के लिए शिक्षकों से सम्पर्क किया है।

- **कहानी सुनाना :** अभिभावकों और बच्चों को जोड़ने का सबसे आसान और प्रभावी तरीक़ा कहानी सुनाना है। हम कहानी सुनाने की कार्यशालाएँ आयोजित करते हैं। इन कार्यशालाओं में हम अभिभावकों को दिखाते हैं कि हाव-भाव, आवाज़ के उतार-चढ़ाव, चीज़ों के इस्तेमाल तथा कहानी के आख़िर में सवाल पूछकर इस प्रक्रिया को किस तरह और ज़्यादा प्रभावी बनाया जा सकता है। हम अभिभावकों को कुछ कहानियाँ भी देते हैं और उन्हें अपने बच्चों को ये कहानियाँ सुनाने तथा अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हम उन्हें बताते हैं कि कहानी सुनाने से किस तरह भाषा कौशलों के विकास में मदद मिलती है। कार्यशाला के बाद, अभिभावक घर पर कहानी सुनाने के अपने वीडियो साझा करते हैं और ये वीडियो सकारात्मक परिणाम दर्शाते हैं।
- **अच्छी आदतें :** सभी अभिभावकों के लिए भोजन की आदतों और होमवर्क पर एक उन्मुखीकरण कार्यक्रम है। अच्छे स्वास्थ्य और पोषण के लिए हम अण्डे और दूध के महत्त्व एवं बच्चों की शिक्षा पर इसके प्रभाव को लेकर चर्चा करते हैं। धार्मिक मान्यताओं के बावजूद, अधिकांश अभिभावक आमतौर पर इस बात से सहमत होते हैं कि उनके बच्चे अण्डे खाएँ। हम उनके बच्चे के लिए घर पर पढ़ाई करने और अपना होमवर्क पूरा करने के लिए एक ख़ास समय तय करने की ज़रूरत पर भी उनसे चर्चा करते हैं। कार्यशाला के बाद, कई विद्यार्थी अपना होमवर्क पूरा करने के लिए घर पर कुछ समय देना शुरू कर देते हैं।

अभिभावकों और समुदाय को स्कूली कार्यक्रमों में आमंत्रित करना

स्कूल में आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रम स्कूल की संस्कृति, बच्चों की रुचि के क्षेत्रों और स्कूल, अभिभावकों व समुदाय के बीच जुड़ाव को प्रदर्शित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। हमारे स्कूल के सभी कार्यक्रम अभिभावकों और समुदाय की सक्रिय भागीदारी को सुविधाजनक बनाने के लिए डिज़ाइन किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए हम उन सभी को आमंत्रित करते हैं।

- **वार्षिक खेल दिवस** हमारे स्कूल का एक ऐसा कार्यक्रम है जिसका सबको बेसब्री से इन्तज़ार रहता है। इसमें बच्चे, अभिभावक, समुदाय और शिक्षक साथ मिलकर कई तरह की खेल गतिविधियों में भाग लेते हैं। वे सभी अपनी उम्र और भूमिकाएँ भूलकर दोस्ताना माहौल में एक साथ खेलते हैं और कार्यक्रम का आनन्द लेते हैं। यह आयोजन उनके बीच बेहतर संवाद और सम्बन्ध बनाने में मदद करता है, शिक्षकों और समुदाय के बीच दूरियों को कम करता है, अभिभावकों को शिक्षकों के साथ अपने विचार साझा करने में सहज महसूस कराता है।
- **बाल शोध मेला** स्कूल की सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को प्रदर्शित करता है और समुदाय को इन प्रक्रियाओं में उसके योगदान के महत्त्व को समझने में मदद करता है।

चित्र-2 : *स्कूल में आयोजित बाल शोध मेले में आए अभिभावक और समुदाय के लोग।*

इस आयोजन में, कई स्कूलों के बच्चे एक या एक से ज़्यादा समस्याओं पर काम करते हैं और मॉडल, चार्ट व चर्चाओं के ज़रिए अपनी समझ को सामने रखते हैं। यह उन्हें समस्या को समझने और उसके सम्भावित समाधानों का पता लगाने के साथ ही उन्हें बड़े दर्शक वर्ग के सामने प्रस्तुत करने में मदद करता है। शिक्षक और समुदाय बच्चों से सवाल पूछते हैं और यह महसूस करते हैं कि सीखना पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं होता। इससे स्थानीय ज्ञान की अहमियत, सीखने के वास्तविक जीवन के साथ सम्बन्ध और समस्याओं को हल करने के अलग-अलग तरीक़ों पर ध्यान केन्द्रित होता है। विभिन्न मुद्दों पर बच्चों का आत्मविश्वास देखकर समुदाय के लोग प्रेरित महसूस करते हैं। इस तरह, यह आयोजन शिक्षा को लेकर उनकी समझ को व्यापक बनाता है।

- **राष्ट्रीय त्योहार :** हम स्कूल में सभी राष्ट्रीय त्योहारों में भाग लेने के लिए बच्चों के अभिभावकों और समुदाय के सभी लोगों को आमंत्रित करते हैं। बच्चे अपने अभिभावकों और समुदाय के सामने अपने कौशल का प्रदर्शन करने और प्रस्तुतियाँ देने में उत्साहित महसूस करते हैं, इससे उन्हें प्रोत्साहन मिलता है।
- **अभिभावक-शिक्षक बैठकें :** हर तीन महीनों में, हम एक अभिभावक-शिक्षक बैठक आयोजित करते हैं। इस बैठक में, शिक्षक हर एक विद्यार्थी की सीखने की प्रगति पर उनके अभिभावकों के साथ चर्चा करते हैं। वे अपने कुछ अवलोकन भी साझा करते हैं। वे बताते हैं कि स्कूल और अभिभावक मिलकर बच्चे की शिक्षा एवं विकास में कैसे योगदान दे सकते हैं। शिक्षक, अभिभावकों को विद्यार्थियों की बेहतरी के लिए स्कूल द्वारा किए गए प्रयासों के बारे में भी बताते हैं।
- **स्कूल समुदाय नेटवर्क बैठक :** इन बैठकों में, स्कूल शैक्षिक कार्यों, उपलब्धियों और स्कूल सुधार योजना (SIP) में अपनी समग्र प्रगति के बारे में बताता है। हम समुदाय की अपेक्षाओं पर चर्चा करते हैं। इस मुद्दे पर भी बात करते हैं कि स्कूल और समुदाय सभी बच्चों के फ़ायदे के लिए किस तरह मिलकर काम कर सकते हैं। चूँकि ये लोग अलग-अलग समुदायों के प्रतिनिधि होते हैं, इसलिए वे बच्चों की उपस्थिति, और चिह्नित विद्यार्थियों के सीखने पर बेहतर तरीक़े से ध्यान देने जैसे मुद्दों पर अभिभावकों के साथ बातचीत करते हैं। वे स्कूल के सुचारु संचालन की ज़िम्मेदारी लेते हैं और समुदाय की कुछ अपेक्षाओं को भी साझा करते हैं। मसलन, स्कूल के बाद बच्चों को खेल और संगीत जैसे कौशल सिखाना।

गाँवों में कार्यक्रम आयोजित करना

स्कूल के लिए यह ज़रूरी है कि वह समुदाय तक पहुँचे और उसके साथ गतिविधियाँ और योजनाबद्ध बातचीत करने के लिए कुछ मंच तलाशे। इस तरह के कार्यक्रम सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने और विद्यार्थियों को बड़े दर्शक वर्ग के सामने प्रस्तुति देने में आत्मविश्वास पैदा करने के लिए एक मंच उपलब्ध कराने पर केन्द्रित होते हैं। हमारे स्कूल में, विद्यार्थियों और शिक्षकों की कुछ प्रस्तुतियाँ समुदाय में सामाजिक मुद्दों को लेकर जागरूकता पैदा करने के लिए होती हैं।

चित्र-3 : *एक गाँव में विद्यार्थियों द्वारा एक नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति।*

- **विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा प्रस्तुतियाँ :** हमने स्वच्छ और स्वस्थ समाज एवं स्मार्टफ़ोन के लगातार इस्तेमाल के हानिकारक प्रभावों जैसे सन्देश देने के लिए कई गाँवों में नुक्कड़ नाटक किए हैं। इन प्रस्तुतियों में होने वाले नृत्य और गीत हमारे राज्य की संस्कृति और परम्पराओं को दर्शाते हैं। हम खेलने और चित्र बनाने की गतिविधियाँ भी आयोजित करते हैं। ये गतिविधियाँ सभी आयु वर्ग के लोगों को शामिल होने और आनन्द लेने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। हमने देखा है कि कुछ उम्रदराज़ लोग इन गतिविधियों के दौरान अपने बचपन के समय को याद करके भावुक भी हो जाते हैं। इन आयोजनों के माध्यम से, समुदाय स्कूल की संस्कृति को समझता है और इसके साथ जुड़कर ख़ुश होता है।
- **सामुदायिक शिक्षा केन्द्र :** हमारे समुदाय की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए, हमें जो चुनौतियाँ दिखाई दीं उनमें से एक यह थी कि ज़्यादातर विद्यार्थी स्कूल समय के बाद किसी भी शैक्षिक या रचनात्मक गतिविधि में शामिल नहीं होते। हमने समुदाय के कुछ प्रभावशाली लोगों की मदद से गाँव में एक सामुदायिक शिक्षा केन्द्र की स्थापना की जहाँ बच्चों को शाम के समय कुछ रचनात्मक गतिविधियाँ सीखने-करने के लिए एक जगह मिल जाए। समुदाय ने यह केन्द्र शुरू करने की ज़िम्मेदारी ली और हमने कहानी की किताबें और बाक़ी स्टेशनरी उपलब्ध कराई। तीसरी से आठवीं कक्षा के बच्चे हर शाम लगभग डेढ़ घण्टे के लिए केन्द्र में इकट्ठा होते हैं, अपना होमवर्क पूरा करते हैं, कहानियाँ सुनते हैं और कोई-न-कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इस तरह की जगह मिलने से बच्चों को अपने साथियों के साथ सीखने में मदद मिलती है और उनके विकास में समुदाय की भूमिका को बढ़ावा मिलता है।
- **गाँवों में ग्रीष्मकालीन शिविर :** हम जानते हैं कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में निरन्तरता का होना विद्यार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण है। सिखाने और सीखने की निरन्तरता बनाए रखने और रचनात्मक जुड़ाव हेतु छुट्टियों के समय का इस्तेमाल करने के लिए, हम अलग-अलग गाँवों में ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन करते हैं। समुदाय के लोगों के सहयोग से, हमने प्रत्येक गाँव में ऐसी जगहें ढूँढ़ी हैं जहाँ पर पूर्व विद्यार्थियों और शिक्षकों की मदद से हम इन शिविरों का संचालन करते हैं। हम विद्यार्थियों के साथ सुबह के दो घण्टे गणित, भाषा, कला, संगीत और शारीरिक शिक्षा पर काम करते हैं। इन छुट्टियों के दौरान, हम बच्चों को कुछ प्रोजेक्ट सौंपते हैं जो उन्हें पूरे करने होते हैं। समुदाय अपने बच्चों की शिक्षा में सहायता के लिए स्कूल द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करता है।

विद्यार्थियों के घरों का दौरा करना

अपने विद्यार्थियों को जानने के लिए शिक्षकों को समुदाय और विद्यार्थियों की सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थितियों को समझना ज़रूरी है। यह उन्हें सिखाने की प्रभावी और सुलभ योजनाएँ बनाने में मदद करता है। शिक्षक, विद्यार्थियों के घरों का दौरा करते हैं। घर पर विद्यार्थियों की ज़िम्मेदारियों और स्कूल में उनकी शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों जैसी चीज़ों को समझने के लिए अभिभावकों तथा परिवार के दूसरे सदस्यों के साथ बातचीत करते हैं। हमारे स्कूल में नियुक्त होने वाले नए शिक्षक भी उस परिवेश की समग्र समझ हासिल करने के लिए उस समुदाय का दौरा करते हैं जहाँ से उनके विद्यार्थी आते हैं। इसके साथ ही, वे समुदाय के लोगों के साथ बातचीत भी करते हैं। इससे अभिभावक, समुदाय और बच्चों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने के साथ-साथ पाठों की योजना बनाने में भी मदद मिलती है।

नियमित और योजनाबद्ध संवाद के ज़रिए हमने अभिभावकों और समुदाय के साथ मज़बूत सम्बन्ध स्थापित किए। उनके साथ बातचीत को हमने विद्यार्थियों के साथ हमारे नियमित काम का एक हिस्सा बनाया। इससे यह आपसी सम्मान और सहयोग अब हमारी स्कूल संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन चुका है।

अर्धेन्दु शेखर दाश धमतरी, छत्तीसगढ़ स्थित अज़ीम प्रेमजी स्कूल के प्राचार्य हैं। इससे पहले वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में रिसोर्स पर्सन थे। वे गणित में स्नातकोत्तर हैं और गणित से जुड़े मसलों पर शिक्षकों के साथ मिलकर काम करते रहे हैं। वे गणित पढ़ाने में इस्तेमाल होने वाली वैचारिक समझ और शैक्षणिक रणनीतियों पर कार्यशालाएँ आयोजित करते रहते हैं। उन्हें बच्चों के साथ गणित करने में मज़ा आता है। वे तकनीकी संसाधनों की खोज और डिज़ाइन करने में गहरी रुचि रखते हैं। वे छत्तीसगढ़ के लिए मुक्त दूरस्थ अधिगम (Open Distance Learning) के लिए पाठ्यक्रम डिज़ाइन करने और पाठ्यपुस्तकें लिखने की प्रक्रिया में भी शामिल हैं। उनसे arddhendu@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमेय कान्त **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अतुल अग्रवाल